जलवायु परिवर्तन और महिला

➢ हालिया संदर्भ :

- यह सर्वविदित होते हुए भी कि जलवायु परिवर्तन के कारण जो भी विपरीत स्थितियां उत्पन्न हो रहे हैं, उनसे महिलाएं ज्यादा प्रभावित हो रही है, COP–29 के दौरान 'Just Transition work Programme' को नहीं अपनाया गया।
- जलवायु परिवर्तन के कारण अवैतनिक देखभाल कार्य जैसे–सूखे के दौरान पानी लाना या आपदा के दौरान भोजन इकट्ठा करना आदि का बोझ महिलाओं पर पड़ता है लेकिन आम सहमति यही बन पाने के कारण कार्यक्रम को रोक दिया गया।

➢ लिंग कार्य योजना :

- महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन के असमान प्रभावों को पहचानते हुए 'मरुस्थलीकरण' (Desertification) से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (UNCCD) ने वर्ष 2017 में अपने पहलों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए 'लिंग कार्य योजना' की शुरुआत की।
- जलवायु कार्यवाही में लैंगिक समानता और समावेशिका को बढ़ाने के उद्देश्य से जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (UNFCCC) ने 2014 में 'लीमा कार्यक्रम' (लिंग आधारित) को बढ़ावा दिया।

- उपरोक्त दोनों पहलों का उद्देश्य जलवायु कार्यवाही में लैंगिक विचारों को प्रभावी ढंग से एकीकृत किया जाना था।

➢ COP–16 में लैंगिक उत्तरदायी नीतियां :

- UNCCD प्रत्येक 2 वर्ष में भूमि क्षरण एवं मरुस्थलीकरण से निपटने वाली वैश्विक पहलों की समीक्षा के लिए बैठक का आयोजन करती है, जिसे COP (Conference of Parties) कहा जाता है।
- COP–16, जो UNCCD का 16वां सत्र था, 2–13 दिसंबर 2024 के दौरान रियाद (सऊदी अरब) में आयोजित किया गया।
- इसकी थीम–"हमारी भूमि, हमारा भविष्य" है।
- COP–16 के अनुसार, पृथ्वी की 40% भूमि शुष्क एवं बंजर के रूप में वर्गीकृत है।
- COP–16 के दौरान जलवायु परिवर्तन, सूखा, जबरन पलायन एवं खाद्य असुरक्षा जैसे मुद्दे को संबोधित करने पर ध्यान दिया।
- COP–14 (नई दिल्ली) के जेंडर कॉकस के आधार पर COP–16 में उपरोक्त मुद्दों से निपटने के लिए महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर ध्यान दिया गया।
- इसके अलावा जेंडर कॉकस ने महत्वपूर्ण संसाधनों तक महिलाओं के पहुंच को भी बढ़ावा दिया गया।

➢ परिणाम एवं अंतराल :

- जेंडर कॉकस द्वारा UNCCD के नेतृत्व में 'Her Land' नामक अभियान के लिए वैश्विक समर्थन का आह्वान किया ताकि सतत विकास से संबंधित नीतियों में लैंगिक समानता को बढ़ावा दिया जा सके।
- UNCCD ने उपरोक्त नीतियों के प्रवर्तन तथा महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए UN Women जैसे संगठनों के साथ सहयोग का संकल्प लिया।
- समस्त चर्चाओं एवं कार्यप्रणालियों के बावजूद लैंगिक समानता को मजबूत आधार प्रदान नहीं किया गया है।
- इस तथ्य को स्वीकारने के बावजूद कि विकासशील देशों में लगभग 80% तक भोजन का उत्पादन महिलाओं द्वारा किया जाता है लेकिन वैश्विक स्तर पर केवल 13 प्रतिशत भूमि का मालिकाना हक महिलाओं के पास है, लिंग आधारित संकेतकों के लिए कोई विशेष आवंटन नहीं किया गया, जबकि दुनिया भर में सूखे, मरुस्थलीकरण एवं भूमि क्षरण को रोकने के लिए 12 बिलियन USD के आवंटन का वचन दिया गया था।

➢ भारत का लिंग आधारित कार्यक्रम :

- भारत ने "एक पेड़–मां के नाम" जैसी पहलों के माध्यम से पर्यावरण प्रतिबद्धता दर्शाया एवं रियाद में भारतीय दूतावास में एक पौधा भी लगाया।
- COP–16 के दौरान भारत ने उत्तर–पश्चिमी राज्यों में 11.5 लाख हैक्टेयर बंजर भूमि को बहाल करने के लिए अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट (AGWP) नामक एक महत्वाकांक्षी पहल शुरू की है।
- यह पहल स्वदेशी वनारोपण, जैव विविधता संरक्षण और उन्नत जल प्रबंधन के रणनीतियों के साथ GIS जैसे आधुनिक उपकरणों से लैस है, जो प्रकृति–आधारित समाधानों का उपयोग कर समुदाय–आधारित संस्कृति को बढ़ावा देती है।
- भारत ने ISRO एवं राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र जैसे संगठनों के मदद से सूखे की भेद्यता एवं Real–time निगरानी के लिए चेतावनी प्रणाली तैयार की है।

➢ COP–29 में लैंगिक समानता :

- UNFCCC प्रत्येक वर्ष अपने सदस्यों के साथ एक सम्मेलन (COP) आयोजित करता है, जिसमें जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए महत्वपूर्ण फैसले लिए जाते हैं।
- इस वर्ष यानि COP–29 अजरबैजान के बाकू में आयोजित किया गया था, जिसमें जलवायु कार्यवाही के लिए वित्तपोषण पर मुख्य ध्यान था।
- इसके अलावा इन चर्चाओं में जलवायु परिवर्तन से प्रभावित महिलाओं एवं बच्चों के लिए लैंगिक समानता और नीति निर्माण भी शामिल था।
- COP–बैठक में महिलाओं के अधिकार की बात अवश्य की गई लेकिन आयोजन समिति में एक भी महिला प्रतिनिधि नहीं थी। वहीं राष्ट्रीय प्रतिनिधियों में महिलाओं की हिस्सेदारी 35% रही।
- Gender Climate Tracker के अनुसार, COP अपने बैठक में 2008 के बाद से कभी भी महिला–पुरुष को समान प्रतिनिधित्व देने में सफल नहीं रहा है।

➢ जलवायु कार्रवाई में लैंगिक अंतराल के कारण :

1. वित्तपोषण लक्ष्यों की कमी

- 300 मिलियन USD का वचन देने के बावजूद लिंग उत्तरदायी नीतियों के लिए कोई विशेष आवंटन नहीं किया गया। साथ ही इससे संबंधित कोई विशेष लक्ष्य भी निर्धारित नहीं किया गया।

2. अपर्याप्त महिला नेतृत्व :

- COP–29 में महिलाओं की कम भागीदारी ने लैंगिक समानता के झूठे दावों को उजागर कर दिया।

- लैंगिक समानता उपायों को बढ़ावा देने वाले पहलों का स्वागत एवं समर्थन किए जाने के बावजूद किसी अंतिम निर्णय तक नहीं पहुंच पाना COP–29 की विफलता रही।

3. विविध महिला पहचान :

- LGBTQ+ सहित विविध पहचान वाली महिलाओं पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को संबोधित करने वाले प्रस्तावों का रूस, सऊदी अरब एवं वेटिकन सिटी जैसे देशों ने विरोध किया।

➢ COP–29 में भारत :

- भारतीय प्रतिनिधिमंडल ने महिलाओं एवं ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाने में स्वच्छ ऊर्जा पर जोर दिया एवं अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं के सफलताओं के बारे में बताया।
- भारत में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के 'Solar for She' कार्यक्रम का चर्चा किया, जो महिलाओं की ऊर्जा एवं आय के साधनों तक पहुंच बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है, जो UN के SDG (सतत विकास लक्ष्य)–5 (लैंगिक समानता) एवं SDG–7 (स्वच्छ ऊर्जा) के अनुकूल है।

➢ आगे की राह :

- दुनिया को यह जानना होगा कि जलवायु परिवर्तन महिलाओं को असमान रूप से प्रभावित करता है, इसलिए समाधानों में लैंगिक विविधता को शामिल करना जरूरी है।
- एक स्थायी एवं सतत भविष्य को प्राप्त करने के लिए महिलाओं को नेतृत्व, नीति–निर्माण एवं लाभार्थियों के रूप में समानता देना चाहिए।
- COP–29 में पहचाने गए मुद्दों को COP–30 (बेलेम, ब्राजील) के दौरान निर्णयात्मक स्थिति तक ले जाना चाहिए।
- UNCCD के COP–16 ने महिलाओं के मुद्दे एवं मरुस्थलीकरण पर जो सफलताएं अर्जित की, उसे सूखे एवं मिट्टी के क्षरण क्षेत्र में लागू किए जाने की आवश्यकता है।